Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्तोत्र कुसुमांजलि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्तोत्र कुसुमांजलि

संकलन

आचार्य पं. किशोर व्यास

धर्मश्री साहित्य, पुणे.

६ रुपिया

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रथमावृत्ती १९९३

© धर्मश्री साहित्य, पुणे

मुद्रक प्रकाशक
शंकर सारडा,
धर्मश्री साहित्य,
४५९, नारायण पेठ,
पुणे ४११ ०३०

टाईपसेटर्स
ट्रॉन एंटरप्राइजेस
६३५ सदाशिव पेठ,
पुणे ४११ ०३०

कार्यालय
धर्मश्री साहित्य,
नंदादीप, भारत चौक,
संगमनेर, ४२२६०५.
जि. अहमदनगर.

अनुक्रम

१. सूर्यनमस्कार ३
२. प्रातःस्मरण ४
३. लोकहितं मम करणीयम् ५
४. प्रार्थना ६
५. विविध देवताध्यानम् ७
६. प्रासंगिक देवस्मरण ८
७. अमृतवाणी संस्कृत भाषा ११
८. श्रीकृष्णाष्टकम् ११
९. गणपत्यथर्वशीर्षम् १४
१०. शिवध्यानम् १६
११. शिवमानसपूजा १६
१२. वेदसारशिवस्तवः १७
१३. श्रीमधुराष्टकम् १९
१४. भवानी अष्टकम् २१
१५. श्रीराम गुणवर्णन २२
१६. आदित्यहृदयस्तोत्र २८
१७. धर्मतत्त्वमंत्रः ३२
१८. मंत्रपुष्पांजलि ३२

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ सूर्यनमस्कार ॥

ध्यान

ध्येयः सदा सवितृ-मण्डल-मध्यवर्ती ।
नारायणः सरसिजासन-सन्निविष्टः ॥
केयूरवान् मकर-कुण्डलवान् किरीटी ।
हारी हिरण्मयवपुर्धृत-शंख-चक्रः॥

मंत्र

ॐ मित्राय नमः ।
ॐ रवये नमः ।
ॐ सूर्याय नमः ।
ॐ भानवे नमः ।
ॐ खगाय नमः ।
ॐ पूष्णे नमः ।
ॐ हिरण्यगर्भाय नमः ।
ॐ मरीचये नमः ।
ॐ आदित्याय नमः
ॐ सवित्रे नमः
ॐ अर्काय नमः
ॐ भास्कराय नमः
ॐ श्रीसवितृसूर्यनारायणाय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ प्रातःस्मरण ॥

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती ।
करमूले स्थिता गौरी प्रभाते करदर्शनम् ॥१॥

समुद्रवसने देवि! पर्वतस्तनमंडले ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं! पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥२॥

महेन्द्रो मलयः सह्यो देवतात्मा हिमालयः ।
ध्येयो रैवतको विन्ध्यो गिरिश्चारावलिस्तथा ॥३॥

गंगा सिन्धुश्च कावेरी यमुना च सरस्वती ।
रेवा महानदी गोदा ब्रह्मपुत्रः पुनातु माम् ॥४॥

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका ।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः ॥५॥

चतुर्वेदाः पुराणानि सर्वोपनिषदस्तथा ।
रामायणं भारतं च गीता सद्दर्शनानि च ॥६॥

सर्वेऽवताराः ऋषयः वीराः सत्पुरुषास्तथा ।
आचार्याः भारतोत्पन्ना वन्दनीयाः निरन्तरम् ॥७॥

ज्ञानिनो दानिनश्चैव कवयश्च पतिव्रताः ।
स्मरणीयाः सदैवैते समाजोद्धारकास्तथा ॥८॥

समर्थः शंकराचार्यः विवेकानंद एव च ।
एतेषां स्मरणान् नित्यं अविर्भवति पौरुषम् ॥९॥

रत्नाकराधौतपदां हिमालय किरीटिनीम् ।
बह्म-राजर्षिरत्नाढ्यां वन्दे भारतमातरम् ॥१०॥

एतद् - देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥११॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ लोकहितं मम करणीयम् ॥

मनसा सततं स्मरणीयम्
वचसा सततं वदनीयम्
लोकहितं मम करणीयम् ॥ धृ.॥

न भोगभवने रमणीयम्
न च सुखशयने शयनीयम्
अहर्निशं जागरणीयम् ॥ १ ॥

न जातु दुःखं गणनीयम्
न च निजसौख्यं मननीयम्
कार्यक्षेत्रे त्वरणीयम् ॥ २ ॥

दुःखसागरे तरणीयम्
कष्टपर्वतं चरणीयम्
विपत्ति-विपिने भ्रमणीयम् ॥ ३ ॥

गहनारण्ये घनांधकारे
बंधुजना ये स्थिता गव्हरे
तत्र मया संचरणीयम् ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ प्रार्थना ॥

यं ब्रह्मा-वरुणेन्द्र-रुद्र-मरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैर्
वेदैः सांग-पद-क्रमोपनिषदैर् गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥१॥

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माऽच्युतशंकरप्रभृतिभिर् देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्याऽपहा ॥२॥

प्रभोऽहं सदा सत्यवादी भवेयम् ।
प्रभो नैव स्वप्नेऽपि मिथ्या वदेयम् ॥
भवेयं सदा लोककल्याणकारी
भवेयं जगद्दुःख-दैन्यापहारी ॥३॥

प्रभोऽहं सदा मातृभक्तो भवेयम्
प्रभोऽहं सदा पितृभक्तो भवेयम्
प्रभोऽहं सदाऽचार्यभक्तो भवेयम्
प्रभोऽहं सदा देशभक्तो भवेयम् ॥४॥

सदाऽहं स्वधर्मानुरागी भवेयम्
सदाऽहं स्वदेशानुरागी भवेयम् ॥
सदाऽहं स्वभाषानुरागी भवेयम्।
सदाऽहं स्ववेषानुरागी भवेयम् ॥५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सदा ब्रह्मचर्यव्रतं पालयेयम् ।
सदाऽहं सदाचारमार्गे चलेयम् ।
भवेयं विनीतो विवेकी गंभीरः ।
यशस्वी महापण्डितः कर्मवीरः ॥६॥

सर्वेपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात् ॥७॥

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥

॥ विविध देवता ध्यानम् ॥

देवीध्यानम् ।

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके
शरण्ये त्र्यंबके गौरी नारायणी नमोऽस्तुते ॥

हनुमानध्यानम् ।

मनोजवं मारुत तुल्यवेगं
जितेंद्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं
श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

विष्णुध्यानम् ।

शांताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।
लक्ष्मीकांतं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान गम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैक नाथम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ प्रासंगिक देवस्मरण ॥

(सुबह उठतेही स्वयं की दोनों हथेलियाँ देखकर बोलने का श्लोक)

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती ।
करमूले स्थिता गौरी प्रभाते करदर्शनम् ॥

हाथ के अगले भाग में लक्ष्मी का निवास । मध्य भाग में सरस्वती तथा मूलभाग में गौरी का निवास है । इसलिए सुबह (इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति तथा क्रियाशक्ति के निवास स्थान) होथों का दर्शन करें ।

पृथ्वीमाता को वंदन

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमंडले ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥

समुद्ररूप वस्त्र धारण करनेवाली, पर्वतरूप स्तन धारण करनेवाली हे भगवान विष्णु की पत्नी पृथ्वीदेवी! मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। मेरे पैरों का तुम्हें स्पर्श हो रहा है इसलिए मुझे क्षमा करो।

वनस्पति से प्रार्थना

(दातुन करते समय बोलने का श्लोक)

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशून् वसूनि च ।
ब्रह्मप्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥

हे वनस्पती आप हमे आयु, बल, यश, तेजस्विता, प्रज्ञा, पशु, संपत्ति और ब्रह्म को जान सकनेवाली उत्तम तेजस्वी बुद्धि प्रदान कीजिए।

सात नदियोंका आवाहन

(स्नान करते समय बोलने का श्लोक)

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिंधु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिंधु, कावेरी माताओं! आप सभी मेरे स्नान के जल में पधारिये।

मंगल कामना

गंगा सिंधु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा
कावेरी शरयू मेहन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका।
क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता जया गण्डकी
पूर्णाः पूर्णजलैः समुद्रसहिताः कुर्वन्तु मे मंगलम्॥

गंगा, सिंधु, सरस्वती, यमुना, गोदावरी, कावेरी, शरयू, महेन्द्रतनया, चर्मण्वती, वेदिका, क्षिप्रा, वेत्रवती, प्रख्यात महासुरनदी, मंदाकिनी, जया आणि गंडकी ये पवित्र जलसे भरी हुई नदियाँ और समुद्र देवता मेरा कल्याण करें।

सूर्य भगवान को प्रणाम

आदिदेव! नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर।
दिवाकर! नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तुते।

हे आदिदेव सूरज भगवान, मैं आप को प्रणाम करता हूँ। प्रकाश देनेवाले हे भास्कर, आप प्रसन्न हो। हे दिवाकर, हे तेजस्वी प्रभाकर, मैं आपको प्रणाम करता हूँ।

भोजन के समय बोलने के श्लोक

हरिर्दाता हरिर्भोक्ता हरिरन्न प्रजापतिः
हरिः सर्वशरीरस्थो भुङ्क्ते भोजयते हरिः॥
यज्ञशिष्टाशिनःसन्तो मुच्यन्ते सर्वाकिल्विषैः
भुंजते ते त्वद्यं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्
ॐ सहनाववतु। सह नौ भुनक्तु। सहवीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै॥

ॐ शांतिः शांतिः शांति॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्न परोसनेवाला, भोजन करनेवाला तथा अन्न के पदार्थ ये सभी प्रजापालक परमात्मा के ही रूप है। सभी शरीरों में भगवान का निवास है इसलिए खानेवाला और खिलानेवाला परमात्म स्वरूपही है।

यज्ञ याने दूसरों के लिए त्याग तथा सत्कर्म करने के पश्चात् बचा हुआ अन्न जो ग्रहण करते है वे सज्जन सभी पातकों से मुक्त हो जाते है। जो पापी केवल अपने लिए ही रसोई बनाते है वे (केवल) पाप ही भक्षण करते है।

हे प्रभो! हम दोनों की (गुरु-शिष्य) रक्षा करो, हम दोनों का पालन करो, हम दोनों साथ में रहकर पराक्रम तथा पवित्र कार्य करें, हमारा किया हुआ अध्ययन दैवी तथा तेजस्वी हो, हम दोनों द्वेष न करें।

दीपदर्शन

(सायंकाल में दीपक को प्रणाम)

शुभं करोति कल्याणमारोग्यं धनसंपदः ।
शुत्रुबुद्धिविनाशाय दीपज्योति नमोऽस्तुते ॥

हे दीपज्योति! तुम मंगल तथा कल्याण करनेवाली हो। आरोग्य एवं धनसंपत्ति देती हो। किसी को अपना शत्रु मानने के कुविचार को नष्ट करने के लिए मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

दीपज्योतिः परब्रह्म दीपज्योतिर्जनार्दनः ।
दीपो हरतु मे पापं दीपज्योति नमोस्तुते ॥

दीपक का प्रकाश परमात्मरूप है । दीपज्योति जगत का दुःख दूर करनेवाले भगवान का स्वरूप है । दीपक मेरी बुराईयों को दूर करें । हे दीपज्योति, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ अमृतवाणी संस्कृत भाषा ॥

(चाल : कव्वालीची)

सुरससुबोधा विश्वमनोज्ञा । ललिता हृद्या रमणीया ।
अमृतवाणी संस्कृतभाषा । नैव क्लिष्टा न च कठिना ॥ १ ॥

कविकोकिल-वाल्मीकि-विरचित । रामायण-रमणीय-कथा ।
अतीव सरला मधुरमंजुला । नैव क्लिष्टा न च कठिना ॥ २ ॥

व्यास - विरचिता गणेशलिखिता । महाभारते दिव्यकथा ।
कौरवपांडवसंगरमथिता । नैव क्लिष्टा न च कठिना ॥ ३ ॥

कुरुक्षेत्र-समरांगण-गीता। विश्ववन्दिता भगवद्गीता
अमृतमधुरा कर्मदीपिका । नैव क्लिष्टा न च कठिना ॥ ४ ॥

कविकुलगुरुनवरसोन्मेषजा । ऋतुरघुमेघकुमारकविता ।
विक्रम-शाकुन्तल-मालविका। नैव क्लिष्टा न च कठिना ॥ ५ ॥

॥ श्रीकृष्णाष्टकम् ॥

भजे व्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं
स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव नन्दनन्दनम् ।
सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकं
अनंगरंगसागरं नमामि कृष्णनागरम् ॥

वज्र-भूमि के एकमात्र आभूषण, समस्त पापों को नष्ट करनेवाले तथा अपने भक्तों के चित्तों को आनन्दित करनेवाले नन्दनन्दन को सर्वदा भजता हूँ। जिन के मस्तकपर मनोहर मोरपंख का मुकुट है, हाथो में सुरीली बाँसुरी है तथा जो काम कला के सागर है उन नटनागर श्रीकृष्णचन्द्र को नमस्कार करता हूँ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मनोजगर्वमोचनं विशाललोललोचनम्
विधूतगोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम्।
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं
महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णवारणम्।

कामदेव का मानमर्दन करनेवाले, बडे बडे सुन्दर नेत्रोंवाले तथा वज्रगोपों का शोक हरनेवाले कमलनयन भगवान को नमस्कार करता हूँ। जिन्हों ने अपने करकमलो पर गिरिराज को धारण किया था तथा जिनकी मुस्कान और चितवन अति मनोहर है, देवराज इंद्र का मान मर्दन करने वाले उन श्रीकृष्णरूपी गजराज को नमस्कार करता हूँ।

कदम्बसूनकुण्डलं सुचारुगण्डमण्डलं
व्रजांगनैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम्।
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया
युतं सुखैकदायकं नमामि गोपनायकं॥

जिनके कानों में कदम्ब पुष्पों के कुंडल है, परम सुन्दर कपोल है तथा व्रजबालाओं के जो एकमात्र प्राणाधार है, उन दुर्लभ कृष्णचंद्र को नमस्कार करता हूँ। जो गोपगण और नन्दजी के सहित अतिप्रसन्ना यशोदा से युक्त है और एकमात्र आनन्ददायक है उस गोपाल को नमस्कार करता हूँ।

सदैव पादपंकजं मदीयमानसे निजं
दधानमुत्तमालकं नमामि नन्दबालकं।
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं
समस्तगोपमानसं नमामि नन्दलालसम्॥

जिन्होनें अपने चरणकमलों को मेरे मनरूपी सरोवर में स्थापित कर रखा है उन अतिसुन्दर अलकों वाले, नन्दकुमार को नमस्कार करता हूँ तथा समस्त दोषों को दूर करने वाले और समस्त लोकों का पालन करने वाले समस्त वज्रगोपों के हृदय तथा नन्दजी की लालसारूप श्रीकृष्णचंद्र को नमस्कार करता हूँ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भुवो भरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकं
यशोमतीकिशोरकं नमामि चित्तचोरकम्।
दृगन्तकान्तभंगिनं सदासदालसंगिनं
दिने दिने नवं नवं नमामि नन्दसम्भवम्॥

भूमि का भार उतारने वाले संसारसागर के कर्णधार, मनोहर यशोदाकुमार को नमस्कार करता हूँ। अतिकमनीय कटाक्ष वाले सदैव सुन्दर भूषण धारण करने वाले नित्य नूतन नन्दकुमार को नमस्कार करता हूँ।

गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरं
सुरद्विषन्निकन्दनं नमामि गोपनन्दनम्॥
नवीनगोपनागरं नवीनकेलिलम्पटं
नमामि मेघसुन्दरं तडित्प्रभालसत्पटम्॥

गुणों का भंडार सुखसागर, कृपानिधान और कृपालु गोपाल को जो देव शत्रुओं का ध्वंस करने वाले है, नमस्कार करता हूँ। नित्यनूतन लीलाविहारी मेघशाम नटनागर गोपाल को, जो बिजली की सी आभावाला अतिसुन्दर पीताम्बर धारण किये हुए है, नमस्कार करता हूँ।

समस्तगोपनन्दनम् हृदम्बुजैकमोदनं
नमामि कुंजमध्यगं प्रसन्नभानुशोभनम्।
निकाम काम दायकं दृगन्तचारुसायकं
रसालवेणुगायकं नमामि कुंजनायकम्॥

जो समस्त गोपों को आनन्दित करने वाले और हृदयकमल को विकसित करने वाले देदीप्यमान सूर्य के समान शोभायमान है, उन कुंजमध्यवर्ति श्यामसुन्दर को नमस्कार करता हूँ। जो कामनाओं को भलीभांति पूर्ण करनेवाले है, जिन की चारु चितवन बाणों के समान है, सुमधुर वेणु बजाकर गान करने वाले उन कुंजनायक को नमस्कार करता हूँ।

विदग्धगोपिकामनो मनोज्ञतल्पशायिनं
नमामि कुजकानने प्रवृद्धवन्हिपायिनम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा
मया सदैव गीयतां तथा कृपा विधीयताम्।
प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्यधीत्य यः पुमान्
भवेत्स नन्दनन्दने भवे भवे सुभक्तिमान्॥

चतुर गोपिकाओं के मनरूपी सुकोमल शय्यापर शयन करने वाले तथा कुंजवन में बढती हुई दावाग्नि को पान कर जानेवाले श्रीकृष्णचंद्र को नमस्कार करता हूँ। मेरे उपर ऐसी कृपा हो कि जब तब जैसी भी परिस्थिती में रहूँ सदा श्रीकृष्णचंद्र की सत्कथाओं का गान करूँ। जो पुरुष इन दोंनो प्रमाणिक अष्टकों का पाठ या जप करेगा वह जन्म-जन्म में नन्दनन्दन श्यामसुन्दर की भक्ति से युक्त होगा।

॥ गणपत्यथर्वशीर्षम् ॥

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वेमव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम् ॥१॥

ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि ॥२॥

अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमवशिष्यम्। अव पश्यात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात् अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात् ॥३॥

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि ॥४॥

सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि ॥५॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्वं गुणत्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ॥६॥

गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितं तारेण ऋद्धम्। एतत्तव मनुस्वरुपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरुपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरुपम्। बिन्दुरुत्तररुपम्। नादः सन्धानम्। संहिता सन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्रीछन्दः। गणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः ॥७॥

एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥८॥

एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुशधारिणम्।
रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम् ॥
रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।
रक्तगन्धानुलिप्तांगं रक्तपुष्पैः सुपूजितम् ॥
भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्।
आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् ॥
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः ॥९॥

नमो व्रातपतये। नमो गणपतये। नमः प्रमथपतये। नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः ॥१०॥

एतदथर्वशीर्षं योऽधीते। स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापापात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातःप्रयुञ्जानोअपापो भवति। सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति। धर्मार्थकाममोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद् दास्यति स पापीयान् भवति। सहस्त्रावर्तनात् यं यं काममधीते तं तनमेन साधयेत् ॥११॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अनेन गणपतिमभिषिञ्चति। स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नन् जपति। स विद्यावान् भवति। इत्यथर्वणवाक्यम् ब्रह्माद्यावरणं विद्यात् न बिभेति कदाचनेति ॥१२॥

यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते।

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। स सर्वविद् भवति स सर्वविद् भवति। य एवं वेद। इत्युपनिषत् ॥१३॥

॥ शिवध्यानम् ॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैः व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

॥ शिवमानसपूजा ॥

रत्नैःकल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदांकितं चन्दनम्।
जातिचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पंचविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम्।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥ २॥
छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदंगकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा ॥
साष्टांगं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत् समस्तं मया
संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥३॥
आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शंभो तवाराधनम् ॥४॥
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽ पराधम्।
विहितम् विहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शंभो ॥५॥

॥ वेदसारशिवस्तवः ॥

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं
गजेन्द्रस्य कृतिं वसानं वरेण्यम्।
जटाजूटमध्ये स्फुरद्गाङ्गवारि
महादेवमेकं स्मरामि स्मरामि ॥१॥
महेशं सुरेशं सुरारार्तिनाशं
विभुं विश्वनाथं विभूत्यंगभूषम्।
विरूपाक्षमिन्द्वर्कवन्हित्रिनेत्रं
सदानन्दमीडे प्रभुं पंचवक्त्रम् ॥२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं
गवेन्द्राधिरूढं गणातीतरूपम् ।
भवं भास्वरं भस्मना भूषितांगं
भवानीकलत्रं भजे पंचवक्त्रम् ॥ ३ ॥

शिवाकान्त शम्भो शशांकाधमाल
महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन्।
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप
प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप ॥ ४ ॥

परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं
निरीहं निराकारमोङ्कारवेद्यम्।
यतो जायते पाल्यते येन विश्वं
तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम् ॥ ५ ॥

न भूमि न चापो न वह्नि न वायु न च
आकाशमास्ते न तन्द्रा न निद्रा।
न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो
न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्तिं तमीडे ॥ ६ ॥

अजं शाश्वतं कारणं कारणानां
शिवं केवलं भासकं भासकानाम्।
तुरीयं तमःपारमाद्यन्तहीनं
प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम् ॥ ७ ॥

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते
नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते।
नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य
नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य ॥ ८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ
महादेव शम्भो महेश त्रिनेत्र।
शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे
त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः ॥९॥

शम्भो महेश करुणामय शूलपाणे
गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन।
काशीपते करुणया जगदेतदेकस्त्वं
हंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि ॥१०॥

त्वत्तो जगद्भवति देव भव स्मरारे
त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ।
त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश
लिंगात्मकं हर चराचरविश्वरूपिन् ॥११॥

॥ श्री मधुराष्टकम् ॥

अधरं मधुरं वदनं मधुरं
नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥१॥

वचनं मधुरं चरितं मधुरं
वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥२॥

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः
पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ३ ॥

गीतं मधुरं पीतं मधुरं
भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ४ ॥

करणं मधुरं तरणं मधुरं
हरणं मधुरं स्मरणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ५ ॥

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा
यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ६ ॥
गोपी मधुरा लीला मधुरा
युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ७ ॥

गोपा मधुरा गावो मधुरा
यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥ ८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ भवानी अष्टकम् ॥

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥१॥

भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः।
कुसंसारपाशबद्धः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥२॥

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥३॥

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातः
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥४॥

कुकर्मी कुसंगी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥५॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥७॥

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥८॥

॥ श्रीरामगुणवर्णन ॥

(श्रीमत् वाल्मीकिरामायण-अयोध्या कांड-प्रथम सर्ग ८ ते ३४)

कौसल्या शुशुभे तेन पुत्रेणामिततेजसा।
या वरेण देवानामदितिर्वज्रपाणिना ॥८॥

उन अमित तेजस्वी पुत्र श्रीरामचन्द्रजी से महारानी कौसल्या की वैसी ही शोभा होती थी, जैसे वज्रधारी देवराज इन्द्र से देवमाता अदिति सुशोभित होती हैं ॥८॥

स हि रूपोपपन्नश्च वीर्यवाननसूयकः।
भूमांवनुपमः सूनुर्गुणैर्दशरथोपमः ॥९॥

श्रीराम बडे ही रूपवान् और पराक्रमी थे। वे किसी के दोष नहीं देखते थे। भूमण्डल में उनकी समता करने वाला कोई नहीं था। वे अपने गुणों से पिता दशरथ के समान एवं योग्य पुत्र थे ॥९॥

स च नित्यं प्रशान्तात्मा मृदुपूर्वं च भाषते।
उच्यमानोऽपि परुषं नोत्तरं प्रतिपद्यते ॥१०॥

वे सदा शान्त चित्त रहते और सान्त्वनापूर्वक मीठे वचन बोलते थे; यदि उनसे कोई कठोर बात भी कह देता तो वे उसका उत्तर नहीं देते थे ॥१०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कदाचिदुपकारेण कृतेनैकेन तुष्यति।
न स्मरत्यपकाराणां शतमप्यात्मवत्तया ॥ ११ ॥

कभी कोई एक बार भी उपकार कर देता तो वे उसके उस एक ही उपकार से सदा संतुष्ट रहते थे और मन को वश में रखने के कारण किसी के सैकडों अपराध करने पर भी उसके अपराधों को याद नही रखते थे ॥ ११ ॥

शीलवृद्धै ज्ञानवृद्धैर्वयोवृद्धैश्च सज्जनैः।
कथयन्नास्त वै नित्यमस्त्रयोग्यान्तरेएवपि ॥ १२ ॥

अस्त्र-शस्त्रों के अभ्यास के लिये उपयुक्त समय में भी बीचबीच में अवसर निकाल कर वे उत्तम चरित्र में, शान में तथा अवस्था में बढ़े सत्पुरुषों के साथ ही सदा बातचीत करते (और उनसे शिक्षा लेते थे) ॥ १२ ॥

बुद्धिमान् मधुराभाषी पूर्वभाषी प्रियंवदः।
वीर्यवान्न च वीर्येण महता स्वेन विस्मितः ॥ १३ ॥

वे बड़े बुद्धिमान् थे और सदा मीठे वचन बोलते थे। अपने पास आये हुए मनुष्यों से पहले स्वयं ही बात करते और ऐसी बातें मुँह से निकालते जो उन्हें प्रिय लगें; बल और पराक्रम से सम्पन्न होनेपर भी अपने महान् पराक्रम के कारण उन्हें कभी गर्व नही होता था ॥ १३ ॥

न चानृतकथो विद्वान् वृद्धानां प्रतिपूजकः।
अनुरक्तः प्रजाभिश्च प्रजाश्चाप्यनुरज्यते ॥ १४ ॥

झुठी बात तो उनके मुख से कभी निकलती ही नहीं थी। वे विद्वान् थे और सदा वृद्ध पुरुषों का सन्मान किया करते थे। प्रजा का श्रीराम के प्रति और श्रीराम का प्रजा के प्रति बडा अनुराग था ॥ १५ ॥

सानुक्रोशो जितक्रोधो ब्राह्मणप्रतिपूचकः।
दीनानुकम्पी धर्मज्ञो नित्यं प्रग्रहवाञ्छुचिः ॥ १६ ॥

वे परम दयालु, क्रोध को जीतने वाले और ब्राह्मणों के पुजारी थे। उनके मन में दीन-दुखियों के प्रति बड़ी दया थी। वे धर्म के रहस्य को जानने वाले, इन्द्रियों को सदा वशमें रखने वाले और बाहर-भीतर से परम पवित्र थे॥ १५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुलोचितमतिः क्षात्रं स्वधर्मं बहु मन्यते।
मन्यते परया प्रीत्या महत् स्वर्गफलं ततः ॥ १६ ॥

अपने कुलोचित आचार, दया, उदारता और शरणागतरक्षा आदि में ही उनका मन लगता था। वे अपने क्षत्रिय धर्म को अधिक महत्त्व देते और मानते थे। वे उस क्षत्रिय धर्म के पालन से महान् स्वर्ग (परम धाम) की प्राप्ति मानते थे; अतः बड़ी प्रसन्नता के साथ उसमें संलग्न रहते थे ॥ १६ ॥

नाश्रेयसि रतो यश्च न विरुद्धकथारुचिः।
उत्तरोत्तरयुक्तीनां वक्ता वाचस्पतिर्यथा ॥ १७ ॥

अमंगलकारी निषिद्ध कर्म में उनकी कभी प्रवृत्ति नहीं होती थी; शास्त्रविरुद्ध बातें को सुनने में उनकी रुचि नही थी; वे अपने न्याययुक्त पक्ष के समर्थन में बृहस्पति के समान एक-से-एक बढ़कर युक्तियाँ देते थे ॥ १७ ॥

अरोगस्तरुणो वाग्मी वपुष्मान् देशकालवित्।
लोके पुरुषसारज्ञः साधुरेको विनिर्मितः ॥ १८ ॥

उनका शरीर नीरोग था और अवस्था तरुण। वे अच्छे वक्ता, सुन्दर शरीर से सुशोभित तथा देश-काल के तत्त्वको समझनेवाले थे। उन्हें देखकर ऐसा जान पड़ता था कि विधाता ने संसार में समस्त पुरुषों के सारतत्त्व को समझनेवाले साधु पुरुष के रूप में एकमात्र श्रीराम को ही प्रकट किया है ॥

स तु श्रेष्ठैर्गुणैर्युक्तः प्रजानां पार्थिवात्मजः।
बहिश्चर इव प्राणो बभूव गुणतः प्रियः ॥ १९ ॥

राजकुमार श्रीराम श्रेष्ठ गुणों से युक्त थे। वे अपने सद्गुणों के कारण प्रजानजों को बाहर विचरनेवाले प्राण की भाँति प्रिय थे।

सर्वविद्याव्रतस्नातो यथावत् साङ्गवेदवित्।
इष्वस्त्रे च पितुः श्रेष्ठो बभूव भरताग्रजः ॥ २० ॥

भरतके बडे भाई श्रीराम सम्पूर्ण विद्याओं के व्रत में निष्णात और छहों अङ्गोंसहित सम्पूर्ण वेदों के यथार्थ ज्ञाता थे। बाणविद्या में तो वे अपने पिता से भी बढ़कर थे ॥ २० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कल्याणाभिजनः साधुरदीनः सत्यवागृजुः।
वृद्धैरभिविनीतश्च द्विजैर्धर्मार्थदर्शिभिः ॥ २१ ॥

वे कल्याण की जन्मभूमि, साधु, दैन्यरहित, सत्यवादी और सरल थे; धर्म और अर्थ के ज्ञाता वृद्ध ब्राह्मणों के द्वारा उन्हें उत्तम शिक्षा प्राप्त हुई थी ॥ २१ ॥

धर्मकामार्थतत्त्वज्ञः स्मृतिमान् प्रतिभानवान्।
लौकिके समयाचारे कृतकल्पो विशारदः ॥ २२ ।

उन्हें धर्म, काम और अर्थ के तत्त्व का सम्यक् ज्ञान था। वे स्मरणशक्ति से सम्पन्न और प्रतिभाशाली थे। वे लोकव्यवहार के सम्पादन में समर्थ और समयोचित धर्माचरण में कुशल थे।

निभृतः संवृताकारो गुप्तमन्त्रः सहायवान्।
अमोघक्रोधहर्षश्च त्यागसंयमकालवित् ॥ २३ ॥

वे विनयशील, अपने आकार (अभिप्राय) को छिपाने वाले, मन्त्र को गुप्त रखने वाले और उत्तम सहायकों से सम्पन्न थे। उनका क्रोध अथवा हर्ष निष्फल नहीं होता था। वे वस्तुओं के त्याग और संग्रह के अवसर को भलीभाँति जानते थे।

दृढभक्तिः स्थिरप्रज्ञो नासद्ग्राही न दुर्वचः।
निस्तन्द्रीरप्रमत्तश्च स्वदोषपरदोषवित् ॥ २४ ॥

गुरुजनों के प्रति उनकी दृढ़ भक्ति थी। वे स्थितप्रज्ञ और असद्वस्तुओं को कभी ग्रहण नहीं करते थे। उनके मुख से कभी दुर्वचन नही निकलता था। वे आलस्यरहित, प्रमादशून्य तथा अपने और पराये मनुष्यों के दोषों को अच्छी जाननेवाले थे ॥ २४ ॥

शास्त्रज्ञश्च कृतज्ञश्च पुरुषान्तरकोविदः।
यः प्रग्रहानुग्रहयोर्यथान्यायं विचक्षणः ॥ २५ ॥

वे शास्त्रों के ज्ञाता, उपकारियों के प्रति कृतज्ञ तथा पुरुषोंके तारतम्य को अथवा दूसरे पुरुषों के मनोभाव को जानने में कुशल थे। यथायोग्य निग्रह और अनुग्रह करने में वे पूर्ण चतुर थे ॥ २५ ॥

सत्संग्रहानुग्रहणे स्थानविन्निग्रहस्य च।
आयकर्मण्युपायज्ञः संदृष्टव्ययकर्मवित् ॥ २६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उन्हे सत्पुरुषों के संग्रह और पालन तथा दुष्ट पुरुषों के निग्रह के अवसरों का ठीक-ठीक ज्ञान था। धन की आय के उपायों को वे अच्छी तरह जानते थे। (अर्थात फूलों को नष्ट न करके उन की रस लेनेवाली भ्रमरों की भाँति वे प्रजाओंको कष्ट दिये बिना ही उनसे न्यायोचित धनका उपार्जन करने में कुशल थे) तथा शास्त्रवर्णित व्ययकर्म का भी उन्हें ठीक-ठीक ज्ञान था ॥ २६ ॥

श्रेष्ठ्य चास्त्रसमूहेषु प्राप्तो व्यामिश्रकेषु च।
अर्थधर्मौ च संगृह्य सुखतन्त्रो न चालसः ॥ २७॥

उन्होंने सब प्रकार के अस्त्रसमूहों तथा संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं से मिश्रित नाटक आदिके ज्ञान में निपुणता प्राप्त की थी। वे अर्थ और धर्म का संग्रह (पालन) करते हुए तदनुकूल काम का सेवन करते थे और कभी आलस्य को पास नहीं फटकने देते थे ॥ २७ ॥

वैहारिकाणां शिल्पानां विज्ञातार्थविभागवित्।
आरोहे विनये चैव युक्तो वारणवाजिनाम् ॥ २८॥

विहार (क्रीडा या मनोरंजन) के उपयोग में आनेवाले संगीत, वाद्य और चित्रकला आदि शिल्पों के भी वे विशेषज्ञ थे। अर्थों के विभाजन का भी उन्हें सम्यक् ज्ञान था। वे हाथियों और घोड़ों पर चढ़ने और उन्हें भाँति-भाँति की चालों की शिक्षा देने में भी निपुण थे ॥ २८ ॥

धनुर्वेदविदां श्रेष्ठो लोकेऽतिरथसम्मतः।
अभियाता प्रहर्ता च सेनानयविशारदः ॥ २९॥

श्रीरामचन्द्रजी इस लोक में धनुर्वेद के सभी विद्वानों में श्रेष्ठ थे। अतिरथी वीर भी उनका विशेष सम्मान करते थे। शत्रुसेना पर आक्रमण और प्रहार करने में वे विशेष कुशल थे। सेना-संचालन की नीति में उन्होंने अधिक निपुणता प्राप्त की थी ॥ २९ ॥

अप्रधृष्यश्च संग्रामे क्रुद्धैरपि सुरासुरैः।
अनसूयो जितक्रोधो न दृप्तो न च मत्सरी ॥ ३० ॥

संग्राम में कुपित होकर आये हुए समस्त देवता और असुर भी उनको परास्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नही कर सकते थे। उनमें दोषदृष्टिका सर्वथा अभाव था। वे क्रोध को जीत चुके थे। दर्प और ईर्ष्या का उनमें उत्यन्त अभाव था ॥ ३० ॥

नावज्ञेयश्च भूतानां न च कालवशानुगः।
एवं श्रेष्ठैर्गुणैर्युक्तः प्रजानां पार्थिवात्मजः ॥ ३१ ॥
सम्मतस्त्रिषु लोकेषु वसुधायाः क्षमागुणैः।
बुद्ध्या बृहस्पतेस्तुल्यो वीर्ये चापि शचीपतेः ॥ ३२ ॥

किसी मी प्राणी के मन में उन के प्रति अवहेलना का भाव नहीं था। वे काल के वश में होकर उसके पीछे-पीछे चलनेवाले नहीं थे। (काल ही उनके पीछे चलता था) इस प्रकार उत्तम गुणों से युक्त होने के कारण राजकुमार श्रीराम समस्त प्रजाओं तथा तीनों लोकों के प्राणियों के लिये आदरणीय थे। वे अपने क्षमासम्बन्धी गुणों के द्वारा पृथ्वी की समानता करते थे। बुद्धि में बृहस्पति और बल-पराक्रम में शचीपति इन्द्र के तुल्य थे ॥ ३१-३२ ॥

तथा सर्वप्रजाकान्तैः प्रीतिसंजननैः पितुः।
गुणैर्विरुरुचे रामो दीप्तः सूर्य इवांशुभिः ॥ ३३ ॥

जैसे सूर्यदेव अपनी किरणों से प्रकाशित होते थे, उसी प्रकार श्रीरामचन्द्रजी समस्त प्रजाओं को प्रिय लगनेवाले तथा पिता की प्रीति बढानेवाले सद्गुणों से सुशोभित होते थे ॥ ३३ ॥

तमेवंवृत्तसम्पन्नमप्रधृष्यपराक्रमम्।
लोकनाथोपमं नाथमकामयत मेदिनी ॥ ३४ ॥

ऐसे सदाचारसम्पन्न, अजेय पराक्रमी और लोकपालों के समान तेजस्वी श्रीरामचन्द्रजी को पृथ्वी (भूदेवी और भूमण्डल की प्रजा) ने अपना स्वामी बनाने की कामना की ॥ ३४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आदित्यहृदय स्तोत्र

(युद्ध काण्ड, सर्ग १०५. श्लोक ४ से २०)

आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्।
जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम् ॥४॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ॥५॥

इस गोपनीय स्तोत्र का नाम है 'आदित्यहृदय'। यह परम पवित्र और सम्पूर्ण शत्रुओं का नाश करनेवाला हे। इसके जपसे सदा विजय की प्राप्ति होती है। यह नित्य अक्षय और परम कल्याणमय स्तोत्र है। सम्पूर्ण मङ्गलों का भी मङ्गल है। इससे सब पापों का नाश हो जाता है। यह चिन्ता और शोक को मिटाने तथा आयु को बढ़ानेवाला उत्तम साधन है।

रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥६॥

भगवान सूर्य अपनी अनन्त किरणोंसे सुशोभित (रश्मिमान) हैं। ये नित्य उदय होनेवाले (समुद्यन्), देवता और असुरों से नमस्कृत, विवस्वान् नाम से प्रसिद्ध, प्रभाका विस्तार करनेवाले (भास्कर) और संसार के स्वामी (भुवनेश्वर) हैं। तुम इनका (रश्मिमते नमः, समुद्यते नमः, देवासुरनमस्कृताय नमः, विवस्वते नमः, भास्कराय नमः, भुवनेश्वराय नमः- नाम-मन्त्रोंके द्वारा) पूजन करो ॥

सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः।
एष देवासुरगणाँल्लोकान् पाति गभस्तिभिः ॥७॥

सम्पूर्ण देवता इन्हींके स्वरूप हैं। ये तेज की राशि तथा अपनी किरणों से जगत् को सत्ता एवं स्फूर्ति प्रदान करनेवाले हैं। ये ही अपनी रश्मियों का प्रसार करने देवता और असुरोंसहित सम्पूर्ण लोकों का पालन करते हैं ॥७॥

एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपां पतिः ॥८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पितरो वसव: साध्या अश्विनौ मरुतो मनु:।
वायुर्वन्हि: प्रजा: प्राण ऋतुकर्ता प्रभाकर: ॥९॥

'ये ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव, स्कन्द, प्रजापति, इन्द्र, कुबेर, काल, यम, चन्द्रमा, वरुण, पितर, वसु, साध्य, अश्विनीकुमार, मरुत्, मनु, वायु अग्नि, प्रजा, ऋतुओं को प्रकट करनेवाले तथा प्रभा के पुंज है ॥८-९॥

आदित्य: सविता सूर्य: खग: पूषा गभस्तिमान्।
सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकर: ॥१०॥
हरिदश्व: सहस्त्रार्चि: सप्तसप्तिर्मरीचिमान्।
तिमिरोन्मथन: शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान ॥११॥
हिरण्यगर्भ: शिशिरस्तपनोऽहस्करो रवि:।
अग्निगर्भोऽदिते: पुत्र:शंख: शिशिरनाशन: ॥१२॥
व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजु:सामपारग:।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवंगम: ॥१३॥
आतपी मण्डली मृत्यु: पिङ्गल: सर्वतापन:।
कविर्विश्वो महातेजा रक्त: सर्वभवोद्भव: ॥१४॥
नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावन:।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते ॥१५॥

इन्हींके नाम-आदित्य (अदितिपुत्र), सविता (जगत् को उत्पन्न करनेवाले), सूर्य (सर्वव्यापक), खग (आकाश में विचरनेवाले), पूषा (पोषण करनेवाले), गर्भस्तमान् (प्रकाशमान), सुवर्णसदृश, भानु (प्रकाशक), हिरण्यरेता (ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के बीज), दिवाकर (रात्रि का अन्धकार दूर करके दिन का प्रकाश फैलानेवाले), हरिदश्व (दिशाओं मे व्यापक अथवा हरे रंग के घोडेवाले), सहस्रार्चि (हजारों किरणों से सुशोभित), सप्तसप्ति (सात घोडेवाले), मरीचिमान् (किरणों से सुशोभित), तिमिरोन्मथन (अन्धकार का नाश करनेवाले), शम्भु (कल्याण के उद्गमस्थान), त्वष्टा (भक्तों को दु:ख दूर करने अथवा जगत् का संहार करनेवाले), मार्तण्डक (ब्रम्हाण्ड को जीवन प्रदान करनेवाले), अंशुमान् (किरण धारण करनेवाले), हिरण्यगर्भ (ब्रम्हा), शिशिर (स्वभाव से ही सुख देनेवाले), तपन (गर्मी पैदा करनेवाले), अहस्कर (दिनकर), रवि (सब की स्तुति के पात्र), अग्निगर्भ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(अग्नि को गर्भ में धारण करनेवाले), अदितिपुत्र, शङ्ख (आनन्दस्वरूप एवं व्यापक), शिशिरनाशन (शीत का नाश करनेवाले), व्योमनाथ (आकाश के स्वामी), तमोमेदी (अन्धकार को नष्ट करनेवाले), ऋग्, यजुः और सामदेव के परागामी, घनदृष्टि (घनी दृष्टि के कारण), अपां मित्र (जल को उत्पन्न करनेवाले), विन्ध्यवीथीप्लवंम (आकाश में तीव्रवेग से चलनेवाले), आतपी (घाम उत्पन्न करनेवाले), मण्डली (किरणसमूह को धारण करनेवाले), मृत्यू (मौत के कारण), पिङ्गल (भूरे रंगवाले), सर्वतापन (सब को ताप देनेवाले), कवि (त्रिकालदर्शी), विश्व (सर्वस्वरूप), महातेजस्वी, रक्त (लाल रंगवाले), सर्वभवोद्भव (सब की उत्पत्ति के कारण), नक्षत्र, ग्रह और तारोंके स्वामी, विश्वभावन (जगत की रक्षा करनेवाले), तेजस्वियों में भी अति तेजस्वी तथा द्वादशात्मा (बारह स्वरूपो में अभिव्यक्त) है। (इन सभी नामों से प्रसिद्ध सूर्यदेव!) आप को नमस्कार है ॥१०-१५॥

नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः ॥१६॥

पूर्वगिरि उदयाचल तथा पश्चिमगिरि-अस्ताचल के रूप में आप को नमस्कार है। ज्योतिर्गणों (ग्रहों और तारों) के स्वामी तथा दिन के अधिपति आपको प्रणाम है ॥१६॥

जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः ॥१७॥

आप जयस्वरूप तथा विजय और कल्याण के दाता है। आप के रथ में हरे रंग के घोडे जुते रहते है। आप को बारंबार नमस्कार है। सहस्रों किरणों से सुशोभित भगवान् सूर्य! आप को बारंबार प्रणाम है। आप आदिति के पुत्र होनेके कारण आदित्यनाम से प्रसिद्ध है, आप को नमस्कार है ॥१७॥

नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः।
नमः प्रद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते ॥१८॥

उग्र (अभक्तों के लिये भंयकर), वीर (शक्तिसम्पन्न) और सारंग (शीघ्रगामी) सूर्यदेव को नमस्कार है। कमलों को विकसित करनेवाले प्रचण्ड तेजधारी मार्तण्ड को प्रणाम है ॥१८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ॥१९॥

(परात्पर-रूप में) आप ब्रह्मा शिव और विष्णु के भी स्वामी है। सूर आपकी संज्ञा है, यह सूर्यमण्डल आपका ही तेज है, आप प्रकाश से परिपूर्ण है, सब को स्वाहा कर देनेवाला अग्नि आप का ही स्वरूप है, आप रौद्ररूप धारण करनेवाले है; आप को नमस्कार है ॥१९॥

तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ॥२०॥

'आप अज्ञान और अन्धकार के नाशक, जडता एवं शीत के निवारक तथा शत्रु का नाश करनेवाले है, आप का स्वरूप अप्रमेय है। आप कृतघ्नों का नाश करनेवाले, सम्पूर्ण ज्योतियों के स्वामी और देवस्वरूप है; आप को नमस्कार है ॥२०॥

तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ॥२१॥

आपकी प्रभा तपाये हुए सुवर्ण के समान है, आप हरि (अज्ञान का हरण करनेवाले) और विश्वकर्मा (संसार की सृष्टि करनेवाले) है; तमके नाशक, प्रकाशस्वरूप और जगत् के साक्षी है; आपको नमस्कार है ॥२१॥

नाशयत्येष वै भूतं तमेव सृजति प्रभुः।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ॥२२॥

रघुनन्दन! ये भगवान् सूर्य ही सम्पूर्ण भूतों का संहार, सृष्टि और पालन करते है। ये ही अपनी किरणों से गर्मी पहुँचाते और वर्षा करते है ॥२२॥

एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः।
एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम् ॥२३॥

ये सब भूतों में अन्तर्यामीरूप से स्थित होकर उनके सो जानेपर भी जागते रहते है। ये ही अग्निहोत्र तथा अग्निहोत्री पुरुषों को मिलनेवाले फल है ॥२३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ धर्मतत्त्व मंत्रः ॥

हिन्दूराष्ट्रेण मानवस्य इतिहासे महत्कार्यं कृतम् अस्ति। अद्यापि च कर्तव्यम् अस्ति। अतएव मे हिन्दुत्वघोषः। हिन्दुत्वमंत्रः।

(उच्चैः विहस्य) विस्मर्यतां सिन्धूः !

किं वदसि? विस्मर्यतां सिन्धूः इति। न न न न सिन्धुं कदापि न विस्मरामि। सिन्धु विना हिन्दुः। अर्थ विना शब्दः। प्राणान् विना कलेवरः। अतः सिन्धु कदापि न विस्मरामि।

(उच्चैः विहस्य) पुनरपि कथयामि। विस्मर्यतां रामायणम्।

विस्मर्यतां महाभारतम्। विस्मर्यतां भारतवर्षम्।

किं वदसि? विस्मर्यतां रामायणम्। विस्मर्यतां महाभारतम्। विस्मर्यतां भारतवर्षम्। अशक्यं भोः। अशक्यम्। यावत्पर्यन्तम् एकोऽपि हिन्दुः जीवति। एकोऽपि मानवः जीवति। अशक्यं तेन रामायणविस्मरणम्। अशक्य नेत महाभारत विस्मरणम्। अशक्य तेन भारतवर्ष विस्मरणम्। अशक्यं तेन सिन्धुविस्मरणम्। विजयतां भारतवर्षः। विजयतां महाभारतम्। विजयतां रामायणम्।

॥ मंत्रपुष्पांजलि ॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥
ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं
राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समंतपर्यायीस्यात् सार्वभौमः
सार्वायुष आंतादापरार्धात् ॥
पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो
मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे ॥
आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥
एकदंतायविद्महे वक्रतुंडाय धीमहि।
तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अपनी बात

बालक समाज की, देश की सबसे महत्त्वपूर्ण संपत्ति है। परिवार का भावी सुख, तथा समाज का उत्थान, अगली पीढी के निर्माण पर निर्भर करता है। बाल्यकाल में उत्तम नागरिकता के संस्कार प्राप्त किये बिना भावी पीढी का निर्माण संभव नहीं है। इस दृष्टिकोन से गीता परिवार देश के विभिन्न प्रांतो में बाल संस्कार शिबिर, वर्ग तथा केन्द्रों का अयोजन कर रहा है। बालकों का विकास सही दिशा में होकर चरित्र संपन्न, कार्यकुशल, आत्मनिर्भर, श्रध्दावान, सत्कर्मरत युवक पर्याप्त संख्या में समाज मे खडे हुए बिना परिवार का कल्याण अथवा समाज तथा देशका उत्थान संभव नही। और यह साध्य प्राप्त करने के लिए प्राचीन भारतीय ऋषिप्रणीत उपदेशोंका पालन ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपाय है ऐसी हमारी श्रध्दा है।

सत् संस्कारों के इस सिंचन के लिए ज्ञान–शील–विनय–कौशल के विकास की प्रेरणा देनेवाला बाल साहित्य एक अनिवार्य आवश्यकता है। ऐसा साहित्य बोधप्रद होनेके साथ साथ सरल और मनोरंजक भी हो यह भी आवश्यक है।

घर मे बालक को संस्कारप्रद साहित्य उपलब्ध कराना पालकोंका आवश्यक कर्तव्य है। बाल संस्कार केंद्र के संचालकों को भी यह साहित्य संस्कार सिंचन मे उपयोगी सिध्द होगा। ऐसे हमारे प्रकाशनोंकी मालिकाके अंतर्गत यह ग्रंथ पुष्प आपके हाथ में प्रदान करते हुए हम आनंद अनुभव कर रहे है।

-- गीता परिवार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection